अनुसन्धान प्रवाह Anusandhan Pravah
(An Open Access, Peer-Reviewed, Multidisciplinary, Bilingual, E-Journal)
ISSN: 3108-1541
Vol.2, Issue 1, Year 2025, pp 108-117
URL : https://journal.sskhannagirlsdc.ac.in/
सदनलाल सांवलदास खन्ना महिला महाविद्यालय
स्वर्ण जयन्ती वर्ष
2024-2025

# कला और साहित्य में विष्णु के दशावतार में बुद्ध का समावेश

**आशुतोष द्विवेदी* & प्रोफेसर मीनू अग्रवाल****
*शोध छात्र, प्राचीन इतिहास विभाग, सदनलाल सांवलदास खन्ना महिला महाविद्यालय
****शोध निदेशिका** सदनलाल सांवलदास खन्ना महिला महाविद्यालय, संघटक महाविद्यालय, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

***सार संक्षेप:***

*अवतारवाद की अवधारणा में विष्णु के दशावतारों में बुद्ध की भी गणना की गई है। प्रस्तुत प्रपत्र में बुद्ध अवतार के प्रसंग अभिलेख, साहित्य और मूर्तियों के आधार पर एकत्र किए गए हैं। बुद्ध अवतार के पौराणिक सन्दर्भों में मत्स्य, अग्नि, गरूड, भागवत आदि महापुराणों, विष्णुधर्मोत्तर पुराण, अन्य साहित्यिक सन्दर्भों में वृहत्संहिता, अपराजितपृच्छा, जयदेव की गीतगोविन्द, क्षेमेंन्द की रचना आदि से बुद्धावतार के प्रसंग लिए गए हैं। सातवीं शती के उत्तरार्ध के पल्लव युगीन खंडित लेख में भी बुद्ध सहित दस अवतारों का उल्लेख है। कला के क्षेत्र में एक अवतार के रूप में बुद्ध की प्रतिमाओं के उदाहरण दो रूप में प्राप्त होतें है-*

*1.विष्णु की प्रतिमा के दोनो ओर दशावतारों के समूह के साथ बुद्ध*

*2. स्वतन्त्र बुद्धावतार प्रतिमा के रूप में*

*कला में बुद्धावतार में बुद्ध को द्विभुजी और चतुर्भुजी दोनो रूपों में दिखाया गया है। छत्तीसगढ के रायपुर जिले में सिरपुर*

Article Publication:

Published online on: 30/12/2025

Corresponding Author:

**आशुतोष द्विवेदी,**
शोध छात्र,प्राचीन इतिहास विभाग, सदनलाल सांवलदास खन्ना महिला महाविद्यालय, प्रयागराज

Email: ashutoshdwivedi2344@gmail.com

©S.S. Khanna Girls Degree College

Scan For Paper

*की बुद्धावतार की स्वतन्त्र प्रतिमा एवं अन्य अवतारों के परिकर में बुद्ध भी, झांसी के ललितपुर जनपद से प्राप्त दसवीं शती की विष्णु दशावतार मूर्ति में बुद्ध, पन्द्रहवीं शती के चित्तौणगढ के विजय स्तम्भ पर सातवीं मंजिल पर लेख युक्त चतुर्भुजी आसीन बुद्धावतार की स्वतन्त्र प्रतिमा, हिमाचलप्रदेश की भूरीसिंह संग्रहालय स्थित चम्बा से प्राप्त सत्रहवीं शती की द्विभुजी बुद्धावतार प्रतिमा आदि का उल्लेख किया गया है।*

**उद्देश्य-**

- पौराणिक अवतारवाद की अवधारणा में बुद्ध को विष्णु के अवतार के रूप में परिगणित करने वाले सन्दर्भो एवं उल्लेखों का अध्ययन करना।
- विष्णु के दशावतारों में बुद्ध का समावेश कब हुआ,
- विष्णु के दशावतारों में बुद्ध के मूर्ति अंकनों के उदाहरणों को एकत्र करना एवं उनका कलागत अध्ययन प्रस्तुत करना। )

**शोध प्रविधि-**

महापुराणों, साहित्य एवं अन्य अभिलेखीय साक्ष्यों में बुद्धावतार के प्रसंगों को देखना, प्राचीन भारतीय मूर्तिकला के उदाहरणों के लिए कलागत ग्रंथों, ,संग्रहालयों में संरक्षित मूर्तिशिल्प का अध्ययन अवलोकन। इसप्रकार यह अध्ययन साहित्य एवं कला पर आधारित होगा।

**मुख्य शब्द:** दशावतार, कीकटप्रदेश, बुद्धावतार, भूरीसिंह संग्रहालय, दशावतारपट्ट, जयदेव की गीतगोविन्द

**प्रस्तावना-**

भारतीय इतिहास में सर्वप्रथम अवतारवाद का बीज शतपथ ब्राह्मण में मिलता है जिसमें प्रजापति का सम्बन्ध मत्स्य, कूर्म और वराह अवतार से जोडा गया है-**''स यत् कूर्मो नाम एतद् वै रूपं कृत्वा प्रजापति प्रजा असृजत्।''** [(1)] विष्णु के द्वारा वामन का रूप लेकर तीन पगों द्वारा असुरों से पृथ्वी प्राप्त कर लेने की चर्चा भी ब्राह्मण ग्रन्थों में की गई है।[(2)] नृसिंह का सबसे पहले उल्लेख तैत्तरीय आरण्यक में प्राप्त होता है - **''वज्रनखाय विद्महे तीक्ष्णदंष्ट्राय धीमहि तन्नो नारसिंहः प्रचोदयात्।''** [(3)] लेकिन इन प्रसंगों से यह पता नही चल पाता कि इनका प्रयोग विष्णु के अवतार के रूप में किया गया है या नहीं। विष्णु के अवतार के रूप में इनकी चर्चा महाभारत के नारायणीय पर्व में मिलती है। नारायणी

पर्व [4] में केवल छः ही अवतार का उल्लेख है-वराह, नृसिंह, वामन, भार्गव राम, दाशरथि राम तथा कृष्ण। इसमें बुद्ध का नाम शामिल नहीं है। श्रीमद्भगवद्गीता के युग में अवतारवाद वैष्णव धर्म का विशिष्ट अंग बन चुका था। गुप्तकाल में विष्णु के अवतार लोकप्रिय हो गए थे। सामान्य रूप से स्वीकृत दस अवतारों की सूची जिन पुराणों में उपलब्ध होती है वे हैं-

वराह पुराण, 4,2,तथा 48, 17से 22,

मत्स्य पुराण, 285,6 से 7 श्लोक,

अग्नि पुराण, अध्याय 2से 16,

पद्मपुराण, 6,43,13 से 15,

भागवत पुराण में चार अलग अलग स्थानों यथा प्रथम, द्वितीय , दशम और एकादश स्कन्धों में दशावतारों की चर्चा है। ***''मत्स्यःकूर्मोवराहश्च नरसिंहो अथ वामनः। रामो रामश्च रामश्च बुद्ध कल्कीति ते दशः।।''*** [5]। गरूड पुराण में भी दस अवतारों में बुद्ध को परिगणित किया गया है। विशिष्ट बात यह है कि इसमें बुद्ध की गणना भविष्यत अवतार के रूप में की गई है और उनका अवतरण स्थल कीकट प्रदेश बताया गया है- **'' ततः कलौ सम्प्रवृत्ते सम्मोहाय सुरद्विषाम्। बुद्धो नाम्ना जिनसुतः कीकटेषु भविष्यति।'** [6] तथा) ''ततः कलौ सम्प्रवृत्ते सम्मोहाय सुरद्विषाम्। बुद्धो नाम्नाजिनसुतः कीकटेषु भविष्यति।'' [7]।

''वासुदेवः पुनर्बुद्धः स मोहाय सुरद्विषाम्। दवादिनां रक्षणाय अधर्महरणाय च।[8] गरूड आदि पुराणों में बुद्ध अवतार का स्थल कीकट प्रदेश बताया गया है। अभिधानचिन्तामणि के अनुसार कीकट और मगध समानार्थी शब्द है- **''कीकटामगधाकुयाः'**। कीकट का सर्वप्रथम उल्लेख ऋग्वेद, में मिलता है।[9]

प्रारम्भ में बुद्ध वैदिक धर्मपरम्परा के प्रबल विरोधी थे। उनके प्रयास से मगध वेदविरोधी बौद्ध धर्म का केन्द्र बन गया था। सम्भवतः इसी लिए मगध को पुराणों में अपवित्र कहा गया है। ऋग्वेद में जिन अनार्य जातियों का उल्लेख है उनमें अज, यक्षु, कीकट, पिशाच और सिश्रु प्रमुख है। सर्वप्रथम मगध नाम अथर्ववेद में मिलता है।[10] बुद्ध के काल तक मगध क्षेत्र वैदिक क्रियाओं की दृष्टि से देश के पश्चिमी भाग की तुलना में पिछडा हुआ था।अतः मगध को अशुद्ध चित वालों की भूमि माना जाता था। परन्तु स्कन्दपुराण में कीकट प्रदेष में स्थित होने के बावजूद गया को एक तीर्थ के रूप में पवित्र माना गया है-**'' कीकटेषु गया पुण्या नदी पुण्या पुनःपना। तीर्थनामुत्तमं तीर्थ पुण्यो राजगिरि स्तथा।'**

प्रारम्भ में विष्णु के दस अवतारों को मान्यता मिली बाद में इनकी संख्या 22 अथवा 24 प्रचलित हुई।

मत्स्य पुराण(अध्याय 47) में दस अवतारों में तीन अवतार(नारायण, नृसिंह, वामन) दिव्य अवतार तथा सात (दत्तात्रेय, मान्धाता, परशुराम, राम, व्यास, बुद्ध, कल्कि) को मानुष अवतार के अन्तर्गत रखा है। पुसाल्कर महोदय के अनुसार दस अवतारों का वर्गीकरण धार्मिक (मत्स्य, कूर्म, वराह, नृसिंह, एवं वामन), ऐतिहासिक(परशुराम, राम, कृष्ण एवं बुद्ध) और भविष्य (कल्कि) अवतारों की कोटि में किया है।(11)

**बुद्धावतार-**

बुद्ध विष्णु के दस अवतारों में कब परिगणित किए गए यह तथ्य विचारणीय है। कुमारिल ने (12) तन्त्रवार्तिक में लिखा है कि पुराण में धर्म का लोप करने वाले शाक्य आदि का चरित कलिप्रसंग में वर्णित है, परन्तु उनका वचन कौन सुनेगा- ***''स्मर्यन्ते च पुराणेषु धर्मविप्लुतिहेतवः। कलौ शाक्यादयस्तेषां को वाक्यं श्रोतुमर्हति''।*** इस कथन से कुमारिल द्वारा बुद्ध की निन्दा का निहितार्थ लिया जा सकता है। इस प्रकार कुमारिल के समय तक बुद्ध विष्णु अवतार के रूप में शामिल नहीं किए गए रहे होंगे।

1150 ई के आसपास जयदेव की गीतगोविन्द में दशावतारों में बुद्ध को भी स्थान मिला है। (''केशव धृत बुद्ध शरीर जय जगदीश हरे,) । कश्मीरी कवि क्षेमेन्द्र ने 1066 ई में अपने दशावतार महाकाव्य में बुद्ध को नवम अवतार के रूप् में परिगणित किया है । अपरार्क (1100 से 1130 ई.)याज्ञवल्क्य टीका में मत्स्य पुराण का उदाहरण देतें हुए बुद्ध सहित दशावतारों के नाम देतें है।स्पष्ट है कि एक हजार ई के पहले ही बुद्ध वैष्णव दशावतार में शामिल किए जा चुके थें हालांकि कुमारिल बुद्ध की निन्दा करतें हैं अर्थात् कुमारिल के समय तक बुद्ध को वैष्णव अवतारों में सम्मानजनक स्थान नहीं मिल पाया होगा।

दक्षिण भारत के महाबलिपुरम के सातवीं शती के उत्तरार्ध के एक लेख में प्राप्त अधूरे श्लोक में भी बुद्ध का उल्लेख हुआ है- ''.....***हस्य नारसिंहश्च वामनः। रामो रामस्य (श्च) रामस्य (श्च) बुद्धः कल्की च ते दशः।''*** मध्यप्रदेश के सीरपुर नामक स्थल से आठवीं शताब्दी ई के मंदिर में बुद्ध की मूर्ति राम के मूर्ति के साथ है। इसमें बुद्ध ध्यान मुद्रा में हैं।(13) इन पुरातात्विक साक्ष्यों के आधार पर ऐसा माना जाता है कि **आठवीं शताब्दी ई तक बुद्ध का अवतार के रूप में जनमानस द्वारा स्वीकृत हो चुकी थी।**(14)

**कला में बुद्ध - विष्णु के अवतार के रूप में**

***''शान्तात्मा लम्बकर्णश्च गौरांगश्चाम्बरावृतः।*** *ऊर्ध्वपद्मस्थितो बुद्धो वरदाभयदायकः।* [15] **अर्थात् बुद्ध की ध्यानावस्थित, वरद एवं अभय मुद्रा, लम्बे कान, शान्त, पदमासन अवस्था आदि विशेषताओं का उल्लेख है।**

**'' पद्मांकितकरचरण प्रसन्न मूर्तिः सुनीचकेशश्च। पद्मासनोपविष्टः पितेव जगतो भवेद् बुद्धः।''**[16] अर्थात् वृहत्संहिता में बुद्ध को पद्मासन पर स्थित, हाथ और पैरों में पद्म चिह्न से युक्त दिखाने का उल्लेख है। विष्णुधर्मोत्तरपुराण,[17] में बुद्ध के प्रतिमा लक्षणों में कहा गया है ***''काषायवस्त्र समवीतस्कन्धसशक्तचीवरः। पदमानस्थो द्विभुजो ध्यायी बुद्धः प्रकीर्तितः।*** अर्थात् बुद्ध को काषायवस्त्र धारण करने वाला, कंधों पर चीवर, पदमासन अवस्था, दो भुजाओं से युक्त ध्यान रूप में दिखाया जाना चाहिए। पुराणों के समान **अपराजितपृच्छा** [18] में भी बुद्धावतार का उल्लेख है। अपराजितपृच्छा में बुद्ध को **केश** रहित और **काषाय**वस्त्रधारी कहा गया है। **''युगे तत्र भविष्यन्ति मुण्डाः काषायवासाः''**। **रूपमंडन** में उन्हें रक्तपद्मासन पर आसीन, केश और आभूषणों से रहित, ध्यान में लीन और द्विभुजी बताया है।

भारतीय शिल्प में विष्णु के बुद्धावतार की कम मूर्तियां बनी। प्रायः विष्णु के दशावतार अंकन में अन्य अवतारों के साथ बुद्ध का भी अंकन हुआ है।पुराणों की धार्मिक क्रान्ति ने कला को अछूता न छोडा और बुद्ध मूर्ति में भी परिवर्तन दिखने लगा।

**कला में बुद्धावतार कें अंकन- प्रायः वैष्णव दशावतार समूहों में बुद्ध का अंकन नवें स्थान पर है। स्थानक अथवा आसीन मुद्रा में द्विभुजी रूप में प्रदर्शित किया गया है।**

- **<u>दशावतार अंकन सहित विष्णु,झांसी गवर्नमेंट संग्रहालय,</u>**

ललितपुर के सीरोनखुर्द से प्राप्त दसवीं शती ई की स्थानक विष्णु की दशावतार सहित प्रतिमा सम्प्रति झांसी के राजकीय संग्रहालय में संरक्षित है।इसमें विष्णु के दोनो ओर उनके अवतारों में दाहिनी ओर मत्स्य, वराह, वामन, राम और बुद्ध का अंकन है तो बायीं ओर नरसिंह,परशुराम, बलराम और कल्कि का अंकन है।

- **<u>बुद्धावतार रानी की वाव पाटन, गुजरात, लगभग 11वीं शती ई.</u>**

  रान-की-वाव के निर्माण से कई शताब्दियों पहले ही गुजरात से बौद्ध धर्म लुप्त हो चुका था, और मूर्तिकार अब बुद्ध से संबंधित प्रतिमा-विज्ञान से परिचित नहीं थे। इसलिए, यहाँ उनकी आकृति पारंपरिक बुद्ध प्रतिमा से भिन्न

है इस अनूठी मूर्ति का पतला आकार एक तपस्वी के अनुरूप है। वे शरीर को थोड़ा झुकाए, एक छोटी कौपीन और एक ऊपरी वस्त्र पहने, वक्ष पर एक मोटा वस्त्र, गले में एक माला घुटनों तक लंबी माला पहने खड़े हैं। उनके घुंघराले बाल हैं और उनके सिर के मुकुट पर एक हल्का सा उभार उनके अलौकिक व्यक्तित्व का प्रतीक है। उनके लम्बकर्ण लगभग उनके कंधों को छू रहे हैं, जो महापुरुषों के 32 पारंपरिक चिह्नों में से एक है। उनके मोटे वस्त्र बुद्ध के तपस्वी रूप को स्पष्ट रूप से उजागर करते हैं। अपने चार हाथों में वे दो मालाएँ, एक कमल और अपने वस्त्र का किनारा पकड़े हुए हैं। रानी की वाव की अन्य मूर्तियों जैसे वराह, राम आदि की दशावतार स्वतन्त्र मूर्तियों में मुख्य मूर्ति के पार्श्व में अन्य अवतारों को भी दर्शाया गया है उनमें बुद्ध भी शामिल है।

- **15वीं पन्द्रहवी की चित्तौडगढ के विजय स्तम्भ की सातवीं मंजिल पर अन्य वैष्णव अवतारों के साथ बुद्ध की मूर्ति** है। इस मूर्ति में बुद्ध को चतुर्भुजी, पदमासन पर ध्यान मुद्रा में, दो भुजाएं योग रूप में तथा अन्य दो भुजा में गदा एवं चक्र लिए दिखाया गया है। गदा और चक्र आयुध से बुद्ध का वैष्णव स्वरूप स्पष्ट है। इस मूर्ति के उपरी भाग पर **''श्रीबुधरूपं''** लेख के कारण अधिक स्पष्टता से इसे बुद्धावतार का अंकन कह सकतें है अन्यथा यह विष्णु के योगरूप से साम्य रखती है। यह अंकन पन्द्रहवी शताब्दी ई. का है [(19)]|
- **बुद्धावतार, भूरीसिंह संग्रहालय,चम्बा, 17वीं शताब्दी** [(20)] इस मूर्ति में बुद्ध को द्विभुजी, एक उंचे पीट पर ध्यान मुद्रा में आसीन, बायां हाथ से भूमि स्पर्श करते हुए तथा दाहिना हाथ योग मुद्रा में, वक्ष पर श्रीवत्स चिह्न तथा पदमाकृति वाले प्रभामंडल से युक्त, कुण्डल, हार आदि आभूषणों सहित प्रदर्शित किया गया है।
- **चित्तौडगढ के लक्ष्मीनारायण मंदिर** के मुख्यमूर्ति के पार्श्व स्तम्भ पर दशावतार की मूर्तियां उत्कीर्ण हैजिसमें एक बुद्ध भी है इनके हाथ में *अक्षमाला* प्रदर्शित है जो विलक्षण है।
- **कर्नाटक में बादामी** से आठवीं सदी की आसीन बुद्धावतार प्रतिमा का उल्लेख डॉ ए.एल. श्रीवास्तव ने प्राचीन भारतीय देवमूर्तियॉ में किया है। पद्मासन मुद्रा में द्विभुजी, एक हाथ अभय मुद्रा में है दोनो ओर एक एक चवॅरधारी से घिरे बुद्ध की पीठिका पर बुद्ध के दोनो ओर कृमशः चक्र और शंख बना है जो बुद्ध के वैष्णव अवतार का सूचक है।
- **महाराष्ट्र में** दशावतारों में बुद्ध के स्थान पर जगन्नाथ को दर्शाने के उदाहरण मिलतें है।[(21)]

- दशावतार पटट, भरतपुर राज्य संग्रहालय, 10वीं शताब्दी
- ग्वालियर संग्रहालय की वराह मूर्ति पर दशावतार समूह में बुद्ध,

Photo Source : https://viparitachitta.wordpress.com/2012/12/18/iconography-

निन्दसि यज्ञविधेरहहा श्रुतिजातम
सदाय हृदय दर्शित पशु घटम्|
केशव धृत बुद्ध शरीर
जय जगदीश हरे ||

"हे केशव, जगत के स्वामी!
आपने बुद्ध के रूप में अवतार
लिया और दयालु हृदय से वेदों में
वर्णित पशुबलि की निंदा की। हे
हरि, आपकी जय हो!"

उपरोक्त रेखाचित्र ओडिशा की प्राची घाटी स्थित माधव मंदिर का है। यह वही क्षेत्र है जहाँ से जयदेव कवि का आगमन हुआ था और यह भी लगभग 1200 ईस्वी पूर्व का ही है। ऐसा प्रतीत होता है कि उस समय तक बुद्ध, विष्णु के अवतारों में शामिल हो चुके थे। यहाँ उन्हें *चक्र* और *शंख* के प्रतीकों के साथ दर्शाया गया है ।

**निष्कर्ष**

- **प्रायः वैष्णव दशावतार समूहों में बुद्ध का अंकन नवें स्थान पर है।**
- पुरातात्विक साक्ष्यों के आधार **आठवीं शताब्दी ई तक बुद्ध अवतार के रूप में जनमानस द्वारा स्वीकृत हो चुके थे।**
- क्षेमेन्द्र, जयदेव, अपरार्क, अपराजितपृच्छा, आदि के उल्लेखों के आधार पर कह सकते हैं कि बुद्ध निश्चित रूप से दसवीं- ग्यारहवी शती में वैष्णव अवतार के रूपमें परिगणित हो चुके थे।
- पौराणिक विवरणों के आधार पर वैष्णव अवतारों में बुद्ध का समावेश गुप्तोत्तर काल में कहा जा सकता है। गरूड पुराण जो लगभग आठवीं नवीं शती की रचना मानी जाती है, में बुद्ध विष्णु के अवतारों में

परिगणित किए गए हैं। समवेत रूप से साहित्य, कला, अभिलेख इस बात की पुष्टि करते प्रतीत होतें हैं कि आठवीं शती के आसपास या पूर्व बुद्ध को वैष्णव अवतारों मं शामिल कर लिया गया था।

**सन्दर्भ**:


1. *शतपथ ब्राह्मण*,7,5,1,5, तथा 14,2,11,
2. ऋग्वेद, 1,22,17तथा शतपथ ब्राहमण, 1,2,5से 7,
3. *तैतरीय आरण्यक*, प्रपाठक 10, प्रथम अनुवाक,
4. शान्तिपर्व, अध्याय 339,77से 102
5. *भविष्यपुराण*, 4,12,26
6. गरूडपुराण,आचारकाण्ड,1,32
7. भागवतपुराण, 1,3,24 तथा 2,7,37,
8. गरूड पुराण, 1,145,40
9. ऋग्वेद,3,53,54,
10. *अथर्ववेद* ,5,22,14,
11. पुसाल्कर *स्टडीज इन एपिक्स एंड पुरानाज*, पृ. 10,
12. *जैमिनी सूत्र*, 1,3,7)
13. Annual Progress report of *ASI*, Western Circle, 1903-04, page 21, उद्धृत भण्डारकर, *वैष्णव, शैव, और अन्य धार्मिक मत*, पृ. 51-52,
14. उपाध्याय, बलदेव, पुराण विमर्श पृ. 192,
15. ***अग्निपुराण***, 49,8,
16. वृहत्संहिता, 58,44,
17. *विष्णुधर्मोत्तरपुराण*, 3,85,81,
18. ***अपराजितपृच्छा*, 29,2,**

19. पंकजलता श्रीवास्तव, *हिन्दू,जैन तथा बौद्ध प्रतिमा* विज्ञान, पृ.--
20. कुमार, बृजेश, ''बुद्ध प्रतिमा उद्भव और विकास'', *संस्कृति,* अर्द्धवार्षिक पत्रिका, अंक 17, वर्ष 2009, संस्कृति मंत्रालय, नई दिल्ली, पृ. 9,
21. ई बुलेटिन 'धरोहर' के अंक 2025 में प्रकाशित डॉ चन्द्रशेखर का आलेख

**सन्दर्भ ग्रन्थ**


- अवस्थी, अवधबिहारी लाल (2012). गरूड पुराण एक अध्ययन. दिल्ली: चौखम्भा संस्कृत प्रतिष्ठान.
- अग्नि पुराण. प्रयाग: हिन्दी साहित्य सम्मेलन.
- उपाध्याय, बलदेव (2013). पुराण विमर्श. वाराणसी: चौखम्भा विद्याभवन.
- उपाध्याय(1982). प्राचीन भारतीय मूर्ति विज्ञान. वाराणसी : चौखम्भा विद्याभवन.
- कुमार, बृजेश(2009). ''बुद्ध प्रतिमा उद्भव और विकास''. नई दिल्ली: संस्कृति मंत्रालय. अर्द्धवार्षिक पत्रिका, अंक 17.
- गरूड महापुराणम. वेंकटेश संस्करण, मुम्बई.
- मिश्र, इन्दुमती (1972). प्रतिमा विज्ञान. भोपाल : मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी.
- विष्णु पुराण, गीताप्रेस गोरखपुर
- श्रीवास्तव, पंकजलता. हिन्दू,जैन तथा बौद्ध प्रतिमा विज्ञान.
- श्रीवास्तव, ए.एल. प्राचीन भारतीय देवमूर्तियां, लखनऊ.
- श्रीमद्भागवत महापुराण, गीताप्रेस गोरखपुर.
- Banergea, Jitendra Nath (1956). The Development of Hindu Iconography. Calcutta: University of Calcutta.
- Pusalkar (1955). Studies in Epics and Puranas. Bombay.

❖ Rao, T.A. Gopinatha(1968). Elements of Hindu Iconography. Delhi: Motilal Banarasidass. Vol. 1. Part 1.

राम दशावतार सहित, जिसमें बुद्ध भी शामिल, रानी की वाव, गुजरात, 11वीं शताब्दी,

वराहावतार, पार्श्व में दशावतार में बुद्धांकन, रानी की वाव, लगभग 11वीं शती ई.

**बुद्ध अवतार** रानी की वाव गुजरात, 11वीं शताब्दी,